VOL- VIII ISSUE- VIII AUGUST 2021 PEER REVIEW e-JOURNAL IMPACT FACTOR 7.149 ISSN 2349-638x

# महात्मा फुले : बहुजन के शिक्षा साहयकर्ता

डॉ. प्रकाश कांबळे.
सहयोगी प्राध्यापक
श्रीमती सुशिलादेवी साळुंखे कॉलेज ऑफ एज्युकेशन, उस्मानाबाद.
ई मेल : pkprakashkambale@gmail.com

## परिचय :

महात्मा फुलेजी के जन्म से पहले पेशवाई का अंत हो चुका था और अंग्रेजी हुकुमत ने पूरे देश को जकड लिया था । समाज में वर्णव्यवस्था, जातिवाद और विषमता बहुत थी । ज्ञान का अधिकार उँचे वर्ग के चंद लोगों के हाथ ही था । स्वतंत्रता, समता और बंधुता पर विश्वास रखनेवाले किसान और श्रमिकों के दुखों का निवारण करने के लिए , सत्यशोधक समाज की स्थापना करनेवाले, दलितों के उदधारक, स्त्री और दलितों की समस्या हल करनेवाले, सामाजिक विषमता के विरूध्द आवाज उठानेवाले महात्मा जोतिबा फुले सामान्य लोगों की शिक्षा के लिए आगे आनेवाले पहले महापुरूष थे । उन्हें महाराष्ट्र के मार्टिन ल्यूथर इस नाम से पहचाना जाता था । महात्मा फुले जी मानवतावादी थे । मैकाले के खलिते को उन्होंने कडा विरोध किया था । उस खलिते में ऐसा कहा गया था कि, शिक्षा उँचे वर्ग से लेकर नीचे वर्ग तक आनी चाहिए । भारतीय समाज के उँचे वर्ग के लोगों को पहले शिक्षा मिलनी चाहिए इस विचार के अंग्रेज लोग थे । उँचे वर्ग के लोग अगर पहले पढेंगे तो वही लोग नीचे वर्ग के लोगों को पढाएँगे ऐसा अंग्रेजों ने सोचा था लेकिन वैसा हुआ नहीं । महात्मा फुले जी का कहना था कि पहले नीचे वर्ग के लोगों को शिक्षा देनी चाहिए और बाद में उँचे वर्ग के लोगों को, इस प्रकार की शिक्षा प्रणाली पर वे डटे रहें ।

## जन्म :

महात्मा फुले जी का पूरा नाम ज्योतिबा गोविंदराव फुले था । उनका जन्म सन १८२७ में पुणे में हुआ । घर के हालात खराब होने के कारण उन्हें उच्च शिक्षा से दूर रहना पडा । उन्होंने मॅट्रिक तक की शिक्षा पूरी की । उन दिनों अछुतों को शिक्षा ही नहीं मिलती थी । ऐसे समय में अछुतों के लिए अपना सब कुछ देने के लिए उन्होंने ठान ली और उसी प्रकार से कार्य भी करने लगे ।

## ग्रंथ :

महात्मा फुले जी ने कुछ ग्रंथ भी लिखे हैं । १८५५ में उन्होंने तृतीय रत्न नामक ग्रंथ लिखा । १८६९ में ब्राम्हणांचे कसब यह ग्रंथ लिखा । १८७३ में गुलामगिरी यह ग्रंथ लिखा । १८८३ में शेतकऱ्याचा आसूड यह ग्रंथ लिखा । १८८९ में सार्वजनिक सत्यधर्म यह ग्रंथ लिखा । महात्मा फुले जी मन से उदार, हृदय से कोमल और वाणी से स्पष्ट और परखड थे ।

## सामाजिक कार्य :

दोष व्यक्ति में नहीं बल्कि व्यवस्था में होता है यह जानने योग्य उनका मन उर्वर था । इसीलिए काशी नामक गर्भवती विधवा को आत्महत्या से बचाया और उसे ही अपनी बेटी मानकर उसे सम्भाला । उसी काशी के बेटे यशवंत का उन्होंने अपना बेटा मान लिया और उसे गोद लिया । *जब अपने विचार, भावना और प्रेरणा झरने के पानी की तरह साफ और स्वच्छ होती है तभी क्षूद्रता के आगे जाकर अडे हुए लोगों का विचार करना संभव है ।* पानी की जरूरत समझाकर ही उन्होंने अपना पानी का हौदा दलितों के लिए खुला किया । स्त्री के बिना समज की तरक्की असंभव है यह उन्होंने पहचान लिया था । उसी कारण उन्होंने सन १८४८ में लडकियों के लिए पहली पाठशाला शुरू की एवं खुद की पत्नी सावित्रीबाई को पढाया और अपनी ही पाठशाला में उन्हे शिक्षिका पद पर नियुक्त किया गया । सन १८७३ में महात्मा फुले जी ने दलितों के लिए पाठशाला शुरू

की । दलितों के लिए बहुतही बडा शैक्षिक और सामाजिक आधार खडा किया । उन्होंने सार्वभौमिक सक्त और मुफत की शिक्षा का अवलंब किया । फुले जी ने किसानों के बदतर हालातों की कैफियत सरकार के सामने पेश की और सरकार का ध्यान किसानों की ओर खिंचा ।

## शैक्षिक कार्य :

- सत्यशोधक समाज की स्थापना
- बहुजन समाज के पिछडे हुए बच्चों की शिक्षा
- महिला शिक्षा कार्य
- अनाथ बालक गृह की स्थापना
- हंटर आयोग के समक्ष बयान प्रस्तुती

## सत्यशोधक समाज की स्थापना :

समाज में चली आ रही अवांछनीय रूढी, परंपरा, बुरी रीतियॉ और सत्य धर्म का महत्त्व समझाने के लिए महात्मा फुले जी ने सत्यशोधक समाज की स्थापना २४ सितंबर १८७३ में की । समाज में जो अवांछनीय रूढियॉ, परंपरा, अंधविश्वास था उन्हीं में से रास्ता निकालने के लिए कार्य करना है ऐसा उन्होंने ठान लिया था । समाज को स्वतंत्रता, समता, बंधुभाव और मानवता के उपर आधारित संदेश बहुजन समाज को देना था । उसी के साथ साथ समाज के दुर्बल, वंचित घटकों को उनके हक के लिए प्रेरणा देनी थी यह बात उन्होंने गंभीरता से ली थी ।

## सत्यशोधक समाज के तत्त्व

→ सभी को एक दूसरे के साथ बंधुभाव से रहना है
→ सभी मानव ईश्वर की संतान हैं–
→ ईश्वर और भक्त के बीच किसी बिचौलिये की आवश्यकता नहीं है

## बहुजन समाज के पिछडे हुए बच्चों की शिक्षा :

भारत पर अंग्रेजों की हुकुमत थी । भारत को अंग्रेजों की गुलामगिरी से छुटकारा पाने के लिए सबसे पहले सभी लोगों को शिक्षा की जरूरत थी । बहुजन समाज के पिछडे हुए बच्चों की शिक्षा के लिए अंग्लैण्ड की रानी से महात्मा फुले जी ने आर्थिक मदद की गुहार लगाई । गरीब बच्चों की शिक्षा के लिए वसतिगृह, पिछडे वर्गों में से अध्यापक, पिछडे बच्चों के लिए व्यावसायिक शिक्षा आदि की मॉग की गई और उसी काम में वे जुट गए । शिक्षा के दवारा पिछडे वर्गों की गरिबी, दरिद्रता, अंधश्रध्दा, गुलामगिरी, ऋणबंधन में से किसानों को बचाने के लिए महात्मा फुले जी ने शिक्षा प्रसार जोर से शुरू किया । अंग्रेज किसानों से लगान वसूल करते थे । उसी लगान के बदले में भारतीयों को शिक्षा देने की सुविधा हों इसलिए भारतीयों के मन में एक तरीके का जनमत तैयार करने का काम फुले जी ने शुरू किया ।

## महिला शिक्षा कार्य :

महात्मा फुले जी ने सन १८४८ में पुणे के भिडेवाडा में लडकियों के लिए पहली पाठशाला शुरू की गई । महिलाओं को शिक्षा मिलनी चाहिए इसलिए उन्होंने भरसक कोशिश की । उसी वक्त फुले जी की उम्र केवल २१ साल थी । इस पाठशाला को भिडे जी ने प्रति माह पॉच रूपये देने कबूल किया । महिला शिक्षा का महत्त्व समझाना और महिला शिक्षा की ओर लोगों को आकर्षित करना यह फुले जी की कोशिश थी । उन्हें लोगों का सहयोग अच्छा मिला और उसके तुरंत बाद उन्होंने सन १८५१ में पुणे में ही चिपळुणकर के वाडे में लडकियों के लिए दूसरी पाठशाला शुरू की । दिन–ब–दिन लडकियों की संख्या बढती चली गयी और उसी कारण फुले जी का उत्साह बढने लगा । उसके बाद सन १८५२ में पुणे में ही रास्ता पेठ में लडकियों की तिसरी पाठशाला शुरू की । उसी साल में वेताळ पेठ में अछुतों के लिए चौथी पाठशाला शुरू की । महात्मा फुले जी खुद लडकियों को पढाने लगे । जैसे जैसे काम बढता गया उसी समय उन्हें लगा कि, लडकियों के लिए किसी महिला शिक्षक का होना बहुत ही जरूरी है । उस समय महिला शिक्षक का मिलना असंभव था इसीलिए फुले जी ने अपनी पत्नी सावित्रीबाई को शिक्षा दी और उन्हें महिला शिक्षक बनाया । भारत के इतिहास में सावित्रीबाई यह भारत की पहली महिला शिक्षक बनी ।

## अनाथ बालक गृह की स्थापना :

महात्मा फुले जी ने और एक महान कार्य किया और वह है अनाथ बालक गृह की स्थापना । इस अनाथ बालक गृह में काशिबाई नाम की एक ब्राम्हण गर्भवती विधवा को आश्रय दिया । काशिबाईने उसी अनाथालय

में एक बच्चे को जन्म दिया । उसी का नाम यशवंत रखा गया । उस काशिबाई के यशवंत को महात्मा फुले जी ने सन १८७९ में गोद लिया । एक ब्राम्हण गर्भवती विधवा को पनाह देना और उसके बेटे यशवंत को अपना बेटा मानना उस समय बहुत ही क्रांतिकारी निर्णय था । यशवंत के बडे होने के बाद उसे कोई भी लडकी नहीं दे रहा था लेकिन ज्ञानोबा ससाणे नामक आदमी ने यशवंत को अपनी बेटी देकर उनका ब्याह ४ फरवरी १८८९ में किया । उस समय महात्मा फुले जी ने जो भी कुछ किया वह कितना कठीण था यह आज हमें पता चलता है । वह कार्य उन्होंने अपनी जिद पर किया इसीलिए उन्हें महापुरूष कहा जाता है ।

## हंटर आयोग के समक्ष बयान प्रस्तुती :

सर विल्यम विल्सन हंटर की अध्यक्षता में भारत में शिक्षा सुधार करने के लिए सन १८८२ में शिक्षा आयोग की स्थापना की गयी उसे ही हंटर शिक्षा आयोग के नाम से जाना जाता है । यह आयोग भारत में आने के बाद भारत का प्रतिनिधित्त्व करने हेतु महात्मा फुले जी ने १९ अक्तुबर १८८२ में एक लिखित बयान प्रस्तुत किया । उसमें उन्होंने भारत में शिक्षा की प्रणाली किस तरह होनी चाहिए इसके बारे में अपने विचार प्रस्तुत किए । बारह साल तक के बच्चे के लिए प्राथमिक शिक्षा सक्त और मुफत होनी चाहिए । प्राथमिक पाठशालाओं की संख्या बढानी चाहिए । प्राथमिक पाठशालाओं को उसी प्रांत के सरकार की ओर से अधिक अनुदान मिलना चाहिए । पाठशालाओं का पूरा खर्चा नगरपरिषद को उठाना चाहिए । प्राथमिक पाठशालाओं का कारोबार शिक्षा विभाग के नियंत्रण में रहेगा । प्राथमिक पाठशालाओं के शिक्षक प्रशिक्षित होने चाहिए । शिक्षा में रूचि बढने के लिए छात्रवृत्ति और छ माह व वार्षिक इनाम रखने चाहिए । जिस जगह अछुतों की जनसंख्या बहुत है उसी जगह स्वतंत्र पाठशाला होनी चाहिए । वर्तमान पाठयक्रम में मौलिक बदलाव चाहिए । पाठयक्रम में खेती संबंधी तथा आरोग्य संबंधी विषयों का होना जरूरी है । प्रशिक्षित शिक्षक मिलने के लिए उनकी तनख्वाह बढानी चाहिए । शिक्षक की तनख्वाह बारह रूपयों से कम नहीं होनी चाहिए । बडे गॉवों में शिक्षकों को पंद्रह से बीस रूपये तक तनख्वाह मिलनी चाहिए । सब जन खर्च कर सके ऐसी उच्च शिक्षा की सुविधा होनी चाहिए । किताबों की सूचि सरकारी राजपत्र में प्रकाशित होनी चाहिए । निजी तौर पर प्रवेश परीक्षा के लिए अनुमती होनी चाहिए ।

## महात्मा फुले जी के कार्य का मूल्यमापन :

शिक्षा और समाज इन दो शब्दों में महात्मा फुले जी का जीवन कार्य समाया हुआ है । पूरे समाज की तरक्की, उत्पादन की ओर चलने के लिए शिक्षा की बेहत जरूरी है । इसीलिए विदयार्जन के लिए धर्म के दवारा किए गए बंधनों को तोडकर महिला और अछुतों को शिक्षा के द्वार खोलने के लिए उन्हें भारी कष्ट उठाना पडा । उन्होंने अपने जीवन में चार सूत्रों को बहुत ही महत्त्व दिया । वे सूत्र हैं सदाचार, विवेक, न्यायप्रियता और सहिष्णुता । वे एक सत्यशोधक, समाजसुधारक और लोकशिक्षक थे । पुणे में लडकियों के लिए पाठशाला शुरू कर के महिला शिक्षा का प्रारंभ उन्होंने अलग ढंग से किया । देहाती इलाकों में बच्चों की शिक्षा की सुविधा, राष्ट्र निर्माण में बहुजनों को शिक्षा, शिक्षा प्रणाली में बदलाव, तांत्रिक पाठशाला की स्थापना, पाठयक्रम में त्रिभाषा सूत्र का अवलंब उन्होंने किया । कोठारी शिक्षा आयोग ने त्रिभाषा सूत्र की स्वतंत्रता काल में शिफारस की थी । परंतु उनसे भी पहले महात्मा फुले जी ने इस बात का जिक्र किया था इससे पता चलता है कि फुले जी की सोच कितनी गहरी और दूर की थी । अपने विचारों का प्रसार करने के लिए उन्होंने तृतीय रत्न नाटक लिखा और उसी के तहत शिक्षा इन्सान की तिसरी ऑख है यह संदेश भी दिया । अंधश्रध्दा नष्ट करने के लिए धूप लगाना छोडो, नशा बंद करो, इनसे जो बचे पैसे हैं उनसे किताबें खरीद लो, ऐसा अनमोल उपदेश उन्होंने किया । महात्मा फुले जी के कार्य से राजर्षि छत्रपती शाहू महाराज, कर्मवीर भाऊराव पाटील, संत गाडगे महाराज, डॉ. बाबासाहेब आंबेडकर इन महापुरूषों ने प्रेरणा ली । आगे चलकर डॉ. बाबासाहेब आंबेडकर ने तो महात्मा फुले जी को अपना गुरू ही मान लिया । महात्मा फुले जी को यह समाज परिवर्तन का काम करते समय अपना सारा घर परिवार छोडना पडा लेकिन उन्होंने कभी भी उसकी पर्वाह नहीं की । सत्यशोधक समाज की स्थापना कर के पुरानी रूढी और परंपराओं को छोडने का काम उन्होंने बखुबी से किया ।

## समारोप :

विद्या बिना मति गयी, मति बिना नीति गयी, नीति बिना गति गयी, गति बिना वित्त गया, वित्त बिना शूद्र गये, इतने अनर्थ एक अविद्या ने किए । भारतीय विचारक, समाजसेवी, लेखक, दार्शनिक और कार्यकर्ता ज्योतिराव गोविंदराव फुले जी की पहचान महात्मा फुले और ज्योतिबा फुले के नाम से ज्यादा है । महिलाओं और दलितों के उत्थान के लिए उन्होंने बहुत से काम किए । समाज के सभी वर्गों को शिक्षा देने के वे प्रबल समर्थक थे । वे भारतीय समाज में प्रचलित जाति पर आधारित विभाजन और भेदभाव के घोर विरोधी थे । उनका मानना था एक दिन आएगा जब संकीर्ण मान्यता, अंधविश्वास, रूढिवादी परंपराओं का समूल नाश होगा । महात्मा फुले जी ने दलितों–पतितों, किसानों, श्रमिकों तथा अन्य सर्वहारा वर्ग की दबी आवाज को उभारने और संतोषजनक स्थिति में लाने के लिए उन्होंने एकजूट होकर संघर्ष करने के लिए प्रेरित, शिक्षित और संघटित किया । राष्ट्रपिता महात्मा गांधी भी उन्हें सच्चा महात्मा कहा करते थे ।

## संदर्भ :

1. डॉ.के.यु.घोरमोडे, डॉ.कला घोरमोडे, शैक्षणिक विचारवंत भारतीय व पाश्चात्य (२००६), नागपूर, विदया प्रकाशन.
2. डॉ.सहदेव चौगुले, पाथेय भाग – १ ;२०१२द्ध, कोल्हापूर, रिया पब्लिकेशन्स.
3. पंढरीनाथ सि.पाटील, महात्मा ज्योतिबा फुले यांचे चरित्र, पुणे, राजेश प्रकाशन.
4. प्रा.ना.ग.पवार, उदयोन्मुख भारतीय समाजातील शिक्षण, पुणे, नुतन प्रकाशन.
5. प्राचार्य रा.तु.भगत, प्रा.आ.ल.माळी, थोर शिक्षणतज्ज्ञ, पुणे, गो.य.राणे प्रकाशन.

Aayushi International Interdisciplinary Research Journal
ISSN 2349-638X
www aiirjournal.com